वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर 2016

* धन का खौफनाक इश्क
* एक सभा का सार
* शक्ति तत्व से अंधता और कल्पित मतों का विश्वास
* क्या औरत होना अभिशाप है?
* मेल–मिलाप का आधार सम्मान व कदरदानी है

इंसानियत हमने गंवाई नहीं है, बस भूल गए हैं

8 अगस्त 2015, सुबह 6:30 बजे सूरज मुस्करा रहा था। मॉर्निंगवॉक करने वाले चेन्नई के प्रसिद्ध ग्रीन बेल्ट गिंडे रोड जोन में लंबी सैर के लिए निकल गए थे। सड़क के एक किनारे पर तमिलनाडु की प्रसिद्ध अन्ना यूनिवर्सिटी है और दूसरी ओर खूबसूरत डीअर पार्क है, जहां सैकड़ों हिरण दिन के समय भी व्यस्त सड़क पर आ जाते हैं।

17 साल की आर. स्वाति और उनकी मां टंगापन्नू हाथ में हाथ थामे चल रहे थे और वह छोटी लड़की कई कारणों से बहुत उत्साहित थी। पहला कारण यह था कि गरीब किसान की उस बेटी ने पहले कभी गरीबी के कारण चेन्नई नहीं देखा था और आज वह वहां बायोटेक्नोलॉजी के ग्रेजुएशन कोर्स में प्रवेश लेने जा रही थी और इसके लिए अगले चार साल वह शहर में ही रहने वाली थी।

खुश हो भी क्यों नहीं? गरीब किसान की इस बेटी ने 12वीं की परीक्षा मं 2000 में से 1017 अंक अर्जित किए थे और उसके आवेदन के आधार पर यूनिवर्सिटी की ओर से आज सुबह 8:30 बजे उसे काउंसलिंग में शामिल होने का कॉल लैटर मिला था। वह झूम रही थी और अपने सिर को मां के कंधों पर टिका देती थी। और वह गुनगुना रही थी, तमिल फिलम रोजा का गीत, 'छोटी सी आशा'। उसी समय कुछ अप्रत्याशित घटा। यूनिवर्सिटी अब कितनी दूर है। यह जानने के लिए मां ने सैर पर निकले एक व्यक्ति को कॉल लैटर दिखाया। इसके बाद जो हुआ वह अविश्वासनीय है। उन्हें लगा कि पैरों तले से जमीन खिसक गई है। उन्हें कोयंबटूर की अन्ना अरगम, तमिलनाडू एग्रीकल्वर यूनिवर्सिटी बुलाया गया था लेकिन वे गलती से चेन्नई की अन्ना यूनिवर्सिटी पहुंच गए थे। अब काउंसलिंग शुरू होने में सिर्फ दो घंटे का समय बचा था।

जहां वे लोग खड़े थे और जिस स्थान पर उन्हें पहुंचना था, उसके बीच की दूरी नेशनल हाई-वे 47 पर ठीक 508.2 किलोमीटर थी। वहां तक पहुंचने में कम से कम साढ़े सात घंटे लगते। एक-दूसरे की ओर देखते ही दोनों की आंखों से आंसू बह निकले और लगा कि दोनों ने खामोशी से उस 17 साल की लड़की की 'छोटी सी आशा' को बिना एक शब्द कहे तिलांजलि दे दी। आसूं बह रहे थे। मां ने आसमान की ओर देखा और खामोशी से सवाल किया, अब हम क्या करें। अगले छह घंटे में यह हुआ।

सैर करने वालों का ग्रुप जिसका नाम ट्वॉकर था, जमा हो गया। रणनीति पर विचार हुआ। अन्ना यूनिवर्सिटी में काम करने वाले एक कर्मचारी ने कोयंबटूर में रजिस्ट्रार को फोन किया और उसके काउंसलिंग सेशन को दोपहर 12 बजे करने की मोहलत मांगी। एक वॉकर फ्लाइट की टिकट बुक करने घर चले गए। दोनों के लिए 10,500 रूपए में कोयंबटूर के लिए सुबह 10:30 की फ्लाइट के टिकट बुक किए गए। वॉकर ने उनके लिए नाश्ते का इंतजाम किया और एक अन्य ने एयरपोर्ट जाने के लिए वाहन का प्रबंध किया। एक अन्य वॉकर ने कोयंबटूर एयरपोर्ट से यूनिवर्सिटी कैंपस पहुंचने के लिए वाहन की व्यवस्था की। दो अन्य उनके पास रहे और उन्हें हिम्मत देते रहे कि छोटी लड़की की 'छोटी-सी आशा' जरूरी पूरी होगी।

बाकि पृष्ठ 20

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 9
सितम्बर 2016
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

धन का खौफनाक इश्क

देवत्व के सूर्य भगवान देवात्मा ने हम तुच्छ मनुष्यात्माओं की विशेष कर अपने सेवकों और कर्मचारियों के लिए हृदय की आंखें खोलने वाली एक बड़ी लाईट हाऊस, रोशनी का मीनार स्थापित कर दिया, जब और नीच सुख अनुरागों, नशों, बदचलनियों, जीव हत्याओं आदि आदि की लिस्ट में धन के इश्क को धन के अनुराग को शामिल करके खड़ा कर दिया। कैसे पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह रोशन वाक्य देव मुख से निकाले कि "धन अनुराग बहुत खौफनाक चीज़ है, वह एक एक जन को डाकू और कातिल बना देता है।"

धन अनुराग क्या है? इसको हम सेवक सेविकाएं अक्ल के साथ तो कुछ समझते हैं और सन्तुष्ट रहते हैं, परन्तु यह "बहुत खौफनाक चीज़ है।" इस समुन्द्र से भी गहरी सचाई को समझने के लिए बहुत अधिक मात्रा में ज्योति की आवश्यकता है। परन्तु हमारे नीच अनुरागों की खुमारी इस सचाई को गहराई में अनुभव होने नहीं देती। इसकी प्रकृत हानि को देखने के लिए असमर्थ्य बना देती है।

देव समाज से जुड़कर अति गरीब, तंगी काटने वाले, बेसरो समान, तुच्छ मज़दूरों की हैसीयत रखने वाले जनों के जब मोटे पाप छूट जाते हैं, और ईमानदारी और मेहनत से वह अमीर और कई बहुत अमीर तो हो जाते हैं और होते रहे हैं, परन्तु अपनी अमीरी में वह उक्त सचाई देखने में असमर्थ्य हो जाते हैं, धन प्राप्ति ही मुख्य बन जाती है। यदि ऐसा न होता तो देव समाज में काम करने वालों का आकाल न पड़ा होता।

पहले हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि खौफनाक और बहुत खौफनाक क्या होता है? खौफनाक वह चीज़ है, जो बहुत बड़ी हानि करती है और बहुत खौफनाक वह होती है जो सबसे कीमती वस्तु की हानि या नाश करती हो, जिसकी कोई भरपाई न हो सके। मनुष्य के आस्तित्व में सबसे कीमती वस्तु उसकी जीवनी शक्ति उसकी आत्मा है। हमारे आत्मा की हानि से बढ़कर कोई हानि नहीं। गुरू महाराज पुकार पुकार के फरमाते हैं कि "आत्म पतन और आत्म नाश से बढ़कर मनुष्य के लिए और कोई हानि नहीं" गुरू महाराज ने बहुमूल्य हीरों से कीमती उक्त शब्द, हमारे नीच अनुरागों की खुमारी में हमारी समझ नहीं आते, सारी सारी उमर भी यह हृदय ग्राही नहीं

होते।

धन का इश्क का ज़हर कैंसर की तरह हमारी सबसे कीमती वस्तु (पुत्र से, राजपाठ से भी कीमती) आत्मा का कैसे नाश कर देता है और हमें पता भी नहीं लगता। इसको बहुत गहरे ध्यान से समझना आवश्यक है। इस अन्तर को समझना कि धन कमाना हमारी आवश्यकताओं के लिए, हमारे आत्म सन्मान के लिए आवश्यक है। परन्तु धन कमाना ही लक्ष्य बन जाए तो आत्मा का रोग बन जाता है। जो हमारे मुख्य लक्ष्य को, आत्मा की भलाई को यहां तक कि शरीर को भी अनदेखा कर देता है।

इस सम्बन्ध में गुरू महाराज ने पूजनीय देव शास्त्र में इस प्रकार फरमाया है: -

''धन सम्बन्धी नीच अनुराग के पैदा हो जाने से जो बहुत बड़ी बुराई पैदा होती है कि धन और जायदाद बनाना लाखों जनों का परम लक्ष्य बन जाता है और वह सारी उमर उसे ही प्राप्त करने में लगे रहते हैं, जब तक उनका शरीर मर न जाए या किसी ऐसे रोग में ग्रस्त न हो जाए कि जिसके कारण उसका कमाना असम्भव न हो जाए, तब तक वह इस नीच अनुराग के दास होकर उनकी प्राप्ति के लिए अपनी मान्सिक, शारीरिक शक्तियों को खर्च करते रहते हैं। फिर धीरे धीरे इस महा नीच अनुराग के दास बनकर लाखों जन अपने आत्मा को इतना कमज़ोर बना लेते हैं कि वह इस हालत में इस सत्य को देखने और महसूस करने के योग्य ही नहीं रहते कि धन मनुष्य की एक या दूसरी शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने का केवल एक उपाय वा साधन है न कि यह उसके जीवन का लक्ष्य।"

मनुष्य इससे बढ़कर गुमराह वा विपथगामी नहीं हो सकता क्योंकि करोड़ों अरबों लोग, इसको अपने जीवन का परम वा मुख्य लक्ष्य बना लेते हैं, इसके लिए ही अपनी सारी उमर लगा देते हैं और अपने आत्मा से बेसुध रहकर संग्रह किए हुए धन और पदार्थों के समूह को देख देखकर तृप्ति वा खुशी प्राप्त करते हैं। जिन्होंने अपनी जवानी, अपना बुढ़ापा केवल धन को ही लक्ष्य बनाकर जीवन जिया है, उन्होंने अधिकतर अपने आत्मा का नाश ही किया है। उन्होंने संसारिक कीड़ों की ही सौदागरी की है और उमर बर्बाद की है। फरिश्तों वाला सच्चा सौदा नहीं किया। वह धर्म राज्य की दहलीज भी नहीं पार कर पाए। उनको अपनी धन की उन्नति तो दिखाई देती है, परन्तु उसकी प्राप्ति से क्या खोया है, यह दिखाई नहीं देता।''

धन का अनुराग मनुष्य को धन का गुलाम वा नौकर बना देता है, स्वामी नहीं रहने देता। कई तो विद्या प्राप्ति के लिए भी धन खर्च करने से कतराते हैं। वह धन को अपने से जुदा करने के लिए आज़ाद नहीं रहते। वह धन रूपी मालिक का हुक्म मानने के लिए तत्पर रहते हैं। यहां तक कि डाकूओं के हाथों अपनी जान गंवा सकते हैं, परन्तु अपने धन के खज़ाने का पता नहीं बताते। कई जन मंहगा ईलाज नहीं करवा सकते, जबकि उनके पास धन की कमी नहीं होती। फ़ाज़लिका के एक सेठ लहौर डाक्टर के पास अपने

इकलौते बेटे को ईलाज के लिए ले गया, डाक्टरों ने कहा आप समय पर आ गए हो, अब हम इसे बचा लेंगे। अगर कुछ दिन और हो जाते तो हम भी इसे बचा नहीं सकते थे। फीस के साथ दवाईयों के खर्च को सुनकर वह धन का गुलाम सेठ लहौर से बेटे को घर ले आया और एक सप्ताह के भीतर वह बेटा मर गया। धन का अनुराग पुत्र से भी प्यारा बन जाता है।

गुरू महाराज फरमाते हैं: -

''स्वार्थी धन अनुरागी जन, अपना सब कुछ अपने बेटे को देता है, चाहे वह सारे का सारा शराब, कबाब में उड़ा दे। ऐसे जन स्थूल देह त्याग के बाद अधम लोक में रहते हैं। और घोर, दुख, क्लेश भोगते हैं। परन्तु वह कहते हैं कि मरने के बाद चाहे हम भूत प्रेत ही बन जाएं, (चाहे अधम लोक में ही जलते रहें) परन्तु भलाई के लिए अपना धन नहीं देंगे। ऐसे स्वार्थी और धन अनुरागी जनों के लिए भलाई के सब दरवाजे बन्द हो जाते हैं"

धन का अनुराग कैसे बड़ी से बड़ी अक्ल को भी फेल कर देता है धन एक एक जन को सारी मानवता से महानतम (greates) होने पर भी और महान बुद्धिशाली (The wisest) होने पर भी सबसे कमीना और नीच (The meanest) इन्सान बना देता है। धन के इश्क ने मानवता के इतिहास में ऐसे जिन्दा और रोशन उदाहरण पेश किए है कि धन का प्रेम महान मनुष्यों को भी जेलों की हवा खाने के लिए मजबूर कर देता है।

गुरू महाराज ने एक जस्टिस साहिब की उदाहरण दी है कि डाक्टर के कहने पर भी समय पर पहाड़ों पर न गए। जब गए, तो बिमारी इतनी बढ़ गई थी कि बच न सके। धन भी गया और जान भी गई।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य है, अपनी जान, जीवनी शक्ति (आत्मा) को जानना, उसके भयानक रोगों को जानना, उनसे मुक्त होना और अपने भीतर परोपकार के उच्च भावों को पैदा करना और विकसित करना। परन्तु धन का अनुराग कितना शक्तिशाली है, कि अपनी चमक और आकर्षण से मनुष्य को इतना अन्धा और पागल बनाकर सारी मानवता को अपने लक्ष्य को भूलने और ही मार्गों पर पड़ने के लिए मजबूर करके अपने अस्तित्व के नाश के राह पर डाल देता है। जो परहित के लिए त्याग कर सकते हैं, उनका यह सबसे बड़ा मित्र है, परन्तु जो इसे सम्भाल सम्भाल कर रखते हैं उनके गले का सांप बनकर सबसे बड़ा शत्रु सिद्ध होता है।

धन का प्यार, मनुष्य की और संसारिक प्राप्तियों की तरह आवश्यक रूप से अंहकार के पुरस्कार से श्रंगार देता है। मनुष्य के लिए अंह से बड़ा भयानक और कोई नाशवान रोग नहीं। जितना मनुष्य का अंह बढ़ता है, उतना मनुष्य अन्धा होता जाता है। अपने आपको वास्तविक रूप में देखने के अयोग्य हो जाता है। वह ऊंची हवाओं में ही जीता है। वह देवात्मा का सेवक होकर भी उनके अमूल्य प्रभाव चाहकर भी प्राप्त नहीं कर सकता। वह अपनी कोई कमी वा दोष नहीं देख सकता। 'अंह' अपनी 'मैं' वा अपने पक्षपाती को ही कहते हैं। अंह की फौज में ही स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता

और क्रोध शामिल हैं "घमंडी, स्वार्थी, पक्षपाती और नीच घृणाकारी (क्रोधी) जनों का धर्म राज में प्रवेश नहीं हो सकता।" यह गुरू महाराज का फरमान है। वह देवात्मा की पूजा नहीं कर सकते "कोई ग्रन्थ, कोई गुरू, या कोई कहलाने वाला ईश्वर या खुदा, ऐसे जनों को आत्मिक पतन और विनाश से नहीं बचा सकता।" घमंडी मनुष्य पथ-भ्रष्ट और गुमराह होकर अपने आपको ठीक ठाक, बढ़िया वा बड़ा समझता है और उल्टा दूसरों को गुमराह और भ्रान्त ख़्याल करता है।

धन अनुरागी अपने को धन के बल पर बड़ा समझकर अपनी कोई कमी नहीं देख सकता। धनी को किसी गरीब से क्षमा मांगनी, या किसी को क्षमा करना बहुत कठिन हो जाता है। ऐसे मनुष्यों के भीतर हानि परिशोध के साधनों का अध्याय नहीं खुलता वह कभी भी उच्च भावों को प्राप्त नहीं कर सकते और अपने जीवन का विकास नहीं कर सकते।

धन अनुरागी अनेक बार एकता और सम्बन्धों के भीतर मेल के भी जानी दुश्मन बन जाते हैं। वह केवल धन का सगा रहता है और किसी का नहीं। अमीर बनकर मनुष्य गरीब सम्बन्धियों को कलंक समझने लगता है। अमीरों से निकटता और गरीब सम्बन्धियों से मेल रखने में शर्म अनुभव करता है। किसी के अभाव का एहसास तक नहीं रहता और अपने भी पराए हो जाते हैं। धन के लिए पिता-पुत्र, भाई-भाई एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं एक एक बेटी धन के पीछे अपने ही मायके परिवार के 8-8 जनों का खून कर देती है। धन के पीछे सारा संसार ही युद्ध-क्षेत्र बना हुआ है। पति-पत्नि एक दूसरे के कातिल बन जाते हैं। गरीब सम्बन्धियों की सहायता करने के स्थान पर उनके ही धन वा जायदाद का अपहरण करने के लिए विवश हो जाते हैं। मनुष्य धन अनुराग से पागल हमदर्दी वा इन्सानियत ही खो देता है। धन अनुराग मनुष्य को राक्षस और दरिंदा बना देता है। पूजा स्थान, मन्दिर, जैसे पाक स्थान, राजपाठ, राजनीति सब कुछ धन कमाने के साधन बन जाते हैं। भले से भले कार्य स्थान भी व्यापार के केन्द्र बन जाते हैं, परहित की भावना वहां फीकी पड़ जाती है।

धन का प्रेम और धर्म लोक में वास दोनों एक दुसरे की विरोधी मंजिलें हैं। परसेवा में मनुष्य धन नहीं लगा सकता।

"मेरे लासानी सत्गुरू ने दिखाया भेद यह
मुझको, है जीवन उच्च बनता जो, किसी के काम आ
जावे।" धन का प्रेम और स्वार्थी होना सम अर्थी शब्द हैं। स्वार्थ रूह का सर्वनाश कर देता है। यह मनुष्य की रक्षा और विकास का विरोधी है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने रोशन किया है कि जो व्यक्ति नेचर के विकास के जारी नियम के अनुसार जीता है, अर्थात दूसरे अस्तित्वों की सहायता, सेवा, उत्थान के लिए जीता है, वह अस्तित्व (बेजान, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य) नेचर के विकास के महान नियम के अनुकूल होने के कारण, सदा रक्षा और विकास पाता हैं। और जो वजूद इस से विरोधी चाल रखते हैं, उसका दुखी होना, सन्तप्त रहना, उसका नष्ट होकर लोप हो जाना सुनश्चित है। नेचर की यह पुकार है कि "ऐ

मनुष्यो! यदि बचना चाहते हो, फलना-फूलना चाहते हो, विकास पाना चाहते हो तो इस सचाई को देखो और आंखें खोलो कि धन जोड़ने के लिए नहीं है, धन पर की सेवा, सहायता और उत्थान के लिए है, खुले दिल से खर्च करने के लिए है, परन्तु हमारी रग रग में धन का अनुराग बसा हुआ है, इसलिए हमें यह बात समझ नहीं आती। जैसे पक्का अफीमी पानी से दूर भागता है, उसी प्रकार धन के प्रेमी को धन जुदा करने में अपनी जान निकलती प्रतीत होती है। जो अपनी जान बचाने के लिए भी धन खर्च नहीं कर सकता। ऐसे कैदी और गुलाम के लिए दूसरे के लिए धन का त्याग करना कैसे सम्भव हो सकता है? जीवन विरोधी नियमों का साथ देना, उच्च और महान नियमों की अवहेलना करना, आत्मघात करना है और कुछ नहीं। मनुष्यों की सुख की चाट ने यही आसान रास्ता दिखाया है।

धन का प्रेम मनुष्य को हिंसक बना देता है। बच्चों को अगवा करना उनके हाथ पांव तोड़ देना, उन्हें अन्धा बना देना, लड़कियों को बेचना, वैश्या बना देने जैसे घिनौने काम इसी धन के प्रेम के कारण होते हैं। धन अनुराग के द्वारा मनुष्य का पतन इतना सूक्ष्म है कि जैसे दरिंदे, शेर आदि को अपना कोई कर्म दुख नहीं देता, उसी प्रकार चतुर अमीरों को अपना कोई अन्याय पूर्ण व्यवहार दुख नहीं देता। कई बार दूसरों की अयोग्यता का लाभ उठाकर अपनी तेज बुद्धि उनको झूठा अपनापन दिखाते हैं, वह भोले इन्सान समझते हैं कि यह हमारे हमदर्द और मेहरबान हैं, हमारे भले के लिए हमारा धन लगवा रहे हैं, परन्तु वास्तव में उनका मकसद तरीके से उनके पास जो कुछ भी होता है, उसको हड़पने का होता है। कई भोले किसानों को सूद की ऊंची दर पर कर्ज़ा देते रहते हैं, जब वह पैसे वापिस नहीं कर सकता तो उसकी ज़मीन हड़प लेते हैं। कई मुफ़्त नशे लगाकर, नशई बना देते हैं।

धन का प्रेम मनुष्यों को रिश्वत-ख़ोर बना देता है। गुरू महाराज को एक कानूनगो मिला, उसके यह कहने पर कि वह रिश्वत लेता है, गुरू महाराज तडप कर पुकार उठे, क्या तुम लोगों का खून पीते हो? गुरू महाराज की डिकशनरी में, रिश्वत लेना, अधिक दर से सूद लेना, अधिक मुनाफे पर वस्तुएं बेचना, ज़रूरत से अधिक फीसें लेना, किसी प्रकार भी दूसरों का हक अपहरण करना खून पीने जैसा ही है। जो सूद ख़ोरों, डाक्टरों, रिश्वत ख़ोरी, दुकानदारों, व्यापारियों आदि को कुछ भी दिखाई नहीं देता। दूसरों का हक़ मारने वाला मनुष्य से भेड़िया बन जाता है।

धन अनुराग मीठा, जानलेवा ज़हर है, इस सचाई को स्पष्ट करने के लिए गुरू महाराज की वाणी है: -

"हज़ारों लोग धन को केवल धन के लिए कमाते हैं, उनके भीतर एक ऐसा व्यस्न पड़ जाता है कि वह धन के लालसी होकर, इसको दिन-पर-दिन बढ़ाने में तृप्ति पाते हैं। कई इनमें इतने नीच होते हैं कि अपनी या अपने परिवारिक जनों के शरीर के लिए (विद्या प्राप्ति के लिए) भी खर्च करना नहीं चाहते। वह केवल इसके ढेर को बढ़ाने में ही खुशी हासिल

करते हैं। ओह! ऐसे मनुष्य कि कैसी दुर्गति!! कैसी दुर्दशा!!

"यदि जीवन का कोई उच्च लक्ष्य तुम्हारे सामने हो, तो धन को केवल इकट्ठा करने में ही तृप्ति नहीं पाओगे, और न ही उस धन को ऐसे जनों के लिए छोड़ जाने में सुख हासिल करोगे कि जो तुम्हारे पीछे एक या दूसरे भयानक पाप के गुलाम होकर न केवल तुम्हारे धन को ही नाश करेंगे, बल्कि उसके साथ अपना भी नाश करेंगे।"

धन का अत्यन्त प्रेमी पहले अपने हित को विसार कर, धन के कमाने में सारी उमर बर्बाद करके न केवल स्वंय आत्मघात करते हैं, बल्कि अपने पीछे अपने स्नेहियों के आत्मघात में सहायक होते हैं।

"पापों बाझ न होवे इकट्ठी, माया साथ न जाए।"

बलदेव सिंह

क्या खूब लिखा है किसी ने :-

मैंने हररोज़ जमाने को रंग बदलते देखा है।
उम्र के साथ ज़िन्दगी को ढंग बदलते देखा है।
वह जो चलते थे, तो शेर के चलने का होता था गुमान
उनको भी पांव उठाने के लिए, सहारे को तरसते देखा है।
जिनकी नज़रों की चमक देख सहम जाते थे लोग,
उन्हीं नज़रों को बरसात की तरह रोते देखा है
जिनके हाथों के ज़रा से इशारे से टूट जाते थे पत्थर
उन्हीं हाथों को पत्ते की तरह थर थर कांपते देखा है।
जिनकी आवाज़ के कभी, बिजली के कडकने का होता था भ्रम
उनके होठों पर भी ज़बरन चुप्पी का ताला लगा देखा है।
यह जवानी, यह ताकत, यह दौलत इनके रहते हुए भी इन्सान को बेजान होते देखा है।
अपने आज पर इतना न इतराना मेरे यार।
वक्त की धारा में अच्छे अच्छों को मजबूर होते देखा है।
कर सको तो किसी को खुश करो,
दुख देते तो हज़ारों को देखा है।

एक सभा का सार

यह बात काफी तकलीफ देती है कि परम पूजनीय देवात्मा का कारज कौन करे? हमारी ऐसी योग्यताऐं नहीं हैं और कोई रास्ता नहीं है कोई हल नजर नहीं आता। कई महीनों से यह भावनाऐं चल रही हैं कि भगवान देवात्मा का कारज चलने के लिए है। हमारा जो वजूद है वह दो चीजों से बना है एक शरीर है और एक आत्मा है, इनको मिला कर हमारा जीवन बनता है। यह दोनेा चीजें हमें अपने माता पिता से मिली हैं। इनमें से शरीर हमें नज़र आता है उसका नुकसान उसकी तकलीफ हमें नज़र आती है। हमारी आत्मा का कोई नुकसान, कोई टूटफूट हमें नज़र नहीं आती है। हमारा अन्दर का चर्खा इतना खराब है कि हम अपने शरीर व अपनी आत्मा दोनों की हानि करते हैं। हम पाप और मिथ्या क्यों करते हैं, कौन करवाता है हमारे भाव हमसे पाप और मिथ्या कराते है। हमारा कौन सा भाव हमें सुखों से प्यार करवाता है। मनुष्य आत्मा में केवल नीच सुखों के भाव हमसे मिथ्या और पाप कराते हैं। स्वाद सुख का भाव हमारे भीतर है, वह हमसे ज्यादा खाने को कहता है। डाक्टर कहते हैं आपने यह खाना है और यह नहीं खाना है, पर हम फिर भी वह चीज खा जाते हैं जो डाक्टर हमें खाने को मना करता है। स्वाद सुख वासना कोई छोटी चीज़ नहीं है जो हमारे शरीर की दुश्मन है। एक एक स्वाद सुख हमें हमारी मौत तक ले आती है। हमें अपनी स्वाद वासना से अपने शरीर का नाश कर लेते है। हम हमेशा अपने सुखों का कहना मानते हैं। माता पिता का डाक्टरों का कहना नहीं मानते। हम सुख लालसा के गुलाम हैं, वे हमसे पाप भी करवाते हैं और झूठ भी बुलवाते हैं। हम अपने सुखों के सामने बेबस हैं। अगर हमने अपने भावों का ज्ञान पा लिया तो बहुत कुछ पा लिया। जो भाव जिसके अन्दर हैं वह भाव उसे चलाते हैं चाहे वह साधू है चाहे राजा है, इसी प्रकार sex का भाव हमारे भीतर बहुत भरा पड़ा है। यह भाव बड़े बड़े साधुओं, जजों, मिलट्री के पद धारियों, राजनैतिक लीडरों आदि को जेल की सलाखों में भेज देता है। हमारे भीतर वासनाऐं हैं वह ही हमें प्रेरणाऐं देती हैं, चाहे आप बड़े से बड़े आदमी क्यों न हों। चाहे खिलाड़ी हों, चाहे आसा राम हों, चाहे नारायण साईं हों, वासना हम सब को चलाती है। मेरे भीतर कौन कौन सी वासनाऐं हैं वह मुझे कैसे चलाती हैं। इसका पता चल जाए तो जीवन बदल जाए। देव प्रभाव उसे कहते है जिन प्रभावों को पाकर आप अपनी वासनाओं को सही सही देखें। वह बुरी लगें और उससे निकलने के लिए लालसा पैदा हो जाए। दुनिया में जगराते हैं, पाठ है पूजा हैं कीर्तन हैं मगर देव प्रभाव नहीं है। इन देव प्रभावों की वैसे ही जरूरत है जैसे हमें सांस लेने की जरूरत है। उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं। वृथा प्रचार सभी निष्फल है। हमें अपने गुरू से देव ज्योति और देव तेज की मांग करनी है। जिससे कि हम अपनी वासनाओं को देख सकें।

इसी प्रकार धन का प्यार हम को अंधा और

पागल बना देता है यह प्रेम भी वैसे ही हानि करता है। यह शरीफों का कोढ़ है यह हमको गुलाम बना लेता है। सभी नीच अनुरागों का यही काम है जो हमें अपना गुलाम बना लेते हैं। धन का प्यार, हमें अपना और अपनों का दुशमन बना लेता है। हमें पापी, दुर्बल वा नीच बना देता है। इससे बचने के लिए केवल गुरू की रोशनी व तेज की जरूरत है। ऐसे निराले सत्गुरू मिले हैं जो हमारी अंधता दूर करते हैं हमें दिखाते हैं कि ये नीच अनुराग कितने बड़े राक्षस हैं और ये कितने खराब हैं जो हमें इतना नुक्सान पहुँचाते हैं।

दुनिया में जितने धर्म हैं वह इस तरफ ध्यान नहीं फेरते। वे केवल भजन कीर्तन, अरदास, पाठ, जगराता, तीर्थ यात्रा, स्नान ही धर्म समझते हैं। तुम्हारे अन्दर नीच अनुरागों के कैंसर बढ़ रहे हैं उसके बारे में कोई नहीं बताता है। इस प्रकार की प्रकृति हमें अपना खुद का घात करने वाला बना देती है। जितनी चोरियां, बलात्कार, कत्ल, तलाक आदि के पीछे केवल इन सुखों का प्यार है, किसी प्रकार का सुख जब हमें पकड़ लेता है तो हमें उसका गुलाम बना लेता है। वह उस नशे में पागल किसी का नहीं होता उसका किसी से कोई मतलब नहीं होता है, ना वह परिवार का होता है ना ही अपना होता है।

इसलिए धर्म संगत में आकर गुरू के प्रभावों को पाकर हम अपने इन नीच सुखों को देख सकते हैं और उनसे निकलने के संग्राम में पड़ सकते है। इसी में हम सब की भलाई है।

एक फिक़र :-

बख़्शदे उनको जिनकी किस्मत ख़राब होती है,
वह हरगिज़ नहीं बख़्शा जाता, जिनकी नियत खराब होती है।
गरूर न कर शाहे शरीर का, तेरा भी ख़ाक होगा मेरा भी ख़ाक होगा।
ब्रैंडड ब्रैंडड करने वालो, याद रखना, कफन का कोई ब्रैंड नहीं होता।
कोई सोकर दिल बहलाता है कोई हंसकर दर्द छुपाता है।
क्या करामात है कुदरत की, जिन्दा डूब जाता है, मुर्दा तैर कर दिखाता है।
मौत को देखा तो नहीं, मौत बहुत खूबसूरत होगी
जो उसे मिलता है, वह जीना छोड़ देता है।
ज़िन्दगी में न जाने, कौन सी रात आख़री होगी।
मिलते जुलते रहो भाई, कौन सी मुलाकात आख़री होगी।
ज़माने की ग़जब की एकता देखी, जिन्दा को गिराने की, मुर्दों को उठाने की।

शक्ति तत्व से अंधता और कल्पित मतों का विश्वास

सारे विश्व में शक्तियों की लीला जारी है हर एक शक्ति चाहे वह भौतिक हो, चाहे जीवित, कार्यकारी रूप में एक वा दूसरे प्रकार के अस्तित्वों को परिवर्तित करती है, और अपनी क्रिया से आप भी परिवर्तित होती है। इसीलिए सारे विश्व में प्रत्येक समय परिवर्तन चक्र जारी रहता है। परिवर्तन विश्व का सर्वव्यापी नियम है। हम परिवर्तन से कोई अस्तित्व बनता और कोई बिगड़ता है। बनने के क्रम को विकास और बिगड़ने के क्रम को विनाश कहते है। शक्ति का कार्य अटल है।

श्री देवगुरू भगवन के आत्मा में विश्व के विकासक्रम के अनुसार जिन विचित्र सात्विक और देवशक्तियों का आविर्भाव हुआ है, वह जैसे उनके आत्मा को हिलाती हैं, अथवा उसमें गति (हरकत) पैदा करती हैं, वैसे ही वह औरों को भी हिलाने और उनमें गति उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखती हैं। उनके उपदेशों को सुनकर, उनके लेखों को पढ़कर और कितनी बार उनके पुण्यमय मुख को देखकर, अथवा उनके समीप रहकर हज़ारों आत्माओं में परिवर्तन आया है। उनके एक-एक व्याख्यान व उपदेश के समय नाना प्रकार के लोगों ने उनकी इन शक्तियों के प्रभावों को नाना प्रकार से अनुभव किया है। एक जन ने (जो वासनाओं का दास था) एक बार कहा था कि मैं जब उनके उपदेशों को सुनने जाता था, तब मेरी कुछ और ही हालत होने लगती थी। ऐसा मालूम होता था कि मेरा दिल उनकी तरफ खिंचा जाता है और उस पर उनका अधिकार होता जाता है, मैं ऐसे समय के आने पर झट वहां से उठकर भाग जाता था, जिससे मुझपर उनका और अधिक असर न हो जाए! सचमुच शक्ति का कार्य अनिवार्य है।

ईश्वर अथवा उसकी ओर से रची हुई कहलाने वाली किसी पुस्तक व किसी अन्य देव-देवी यथा ब्रह्मा, शिव, विष्णु, दुर्गा काली, इन्द्र, वायु और अग्नि आदि के कल्पित और **मिथ्या** विश्वास का इन **सत्य** शक्तियों के साथ कोई संबंध नहीं। जैसे रेल का इंजन जो किसी देव व देवी पर विश्वास नहीं करता, किसी ईश्वर व देवते की पूजा नहीं करता, यदि अपने भीतर भाप शक्ति रखता हो, तो वह अवश्य गाड़ियों को खैंचने और उन्हें खैंचकर कहीं का कहीं पहुंचा देने की सामर्थ्य रखता है, और जैसे सूर्य किसी ईश्वर व देवता का विश्वासी व पुजारी न होकर भी अपनी ज्योति की किरणों को पहुंचा कर लाखों घरों के अंधकार को दूर करके उन्हें ज्योतिर्मान कर देता है, और अपनी तेज शक्ति के द्वारा समुद्रों, झीलों और नदियों और तालाबों आदि जलाशयों से असंख्य जल परमाणुओं को खैंचकर उन्हें हवा में भर देता है, अथवा एक प्रदेश की हवा को अत्यंत गरम और हलका करके उसे ऊपर की तरफ भेज देता है, और उसके स्थान में दूसरी वायु के वेगपूर्वक आने से हवा का तुफान पैदा कर देता है, वैसे ही श्री देवगुरू भगवान अपनी युवा अवस्था से ही अपनी उपरोक्त शक्तियों के द्वारा आत्माओं में परिवर्तन पैदा कर रहे हैं। कल्पित ईश्वर के कितने ही विश्वासी और पुजारी इस **शक्ति तत्व** को नहीं समझते। इसलिए सन 1894

ई. में जब श्री देवगुरू भगवान ने ईश्वर के विश्वास को मिथ्या जानकर छोड़ दिया, और उसके अनंतर अपने उच्च से उच्च विकास के द्वारा अपनी शक्तियों के कार्य को और भी अद्‌भुत रूप में प्रकाश करना शुरू किया, तब भी "**शक्ति तत्व**" से अज्ञानी कितने ही ईश्वरवादी अपने मिथ्या विश्वास की हकीकत को न समझ सके। किन्तु कितने ही विरोधी नीच जनों ने यह सोचकर कि यदि साधारण लोगों पर भलीभांत यह विदित किया जाय कि यह ईश्वर को नहीं मानते, तो इनके प्रति चारों ओर घृणा फैल जाएगी, और फिर कोई मनुष्य इनकी ओर मुंह फेरकर भी न देखेगा-यहां तक कि जो आदमी अब इनके अनुगत बने हुए हैं, वह भी इस भेद के प्रगट होने पर भाग जाएंगे, और फिर देव समाज भी न रहेगी। और उसके संस्थापक के काम के बंद हो जाने से लोगों को ईश्वर विश्वास और ईश्वर पूजन के द्वारा अंधता, मोह और पाप आदि में दिनों दिन उन्नत होने का भलीभांत अवसर मिलेगा। इसलिए उपदेशकों और अखबारों और पुस्तकों आदि के द्वारा चारों ओर इस बात के प्रचार की कोशिश जारी हुई, कि देव समाज का बानी ईश्वर को नहीं मानता, और ऐसे पुरुष का केवल यही नहीं कि दर्शन करना पाप है, किन्तु जहां कोई ऐसा परुष रहता हो, वहां रहना भी पाप है। मानों यह लोग पाप से ही पवित्रता लाभ करने के लिए सदा व्याकुल रहते हैं!! कैसी घोर कपटता!! परंतु विश्व उनकी इस मूर्खता और कपटता पर हंसता था। वह जानता था, कि उसमें कुल परिवर्तन शक्तियों के द्वारा हो रहा है, और उसमें जहां-जहां जो-जो शक्ति काम कर रही है, वहां-वहां बराबर परिवर्तन आ रहा है। विश्व का यह नियम अटल है। इसीलिए श्री देवगुरू भगवान के विरोधी अपने कल्पित ईश्वर को सर्व शक्तिमान बनाकर और उसकी ऐसी कल्पित शक्ति का सहारा लेकर उनके विकासकारी अद्वितीय कार्य को रोक न सके। वह ईश्वर की न्याई कोई कल्पित वस्तु नहीं किन्तु सचमुच के **देवता** हैं। वह सचमुच की **देवशक्तियां** रखते हैं, और सचमुच के जगत में सचमुच का परिवर्तन पैदा कर रहे हैं, और दिनों-दिन अधिक से अधिक और विशेष से विशेष और **हितकर से हितकर परिवर्तन ला रहे हैं!!** जिनके आंखें हैं, वह उनकी इन शक्तियों के अलौकिक कार्य को देखते हैं, और उनकी शरण लेकर और उनकी अद्वितीय महिमा का प्रचार करके अपना और अन्य अधिकारी जनों का हित साधन कर रहे हैं।

सैकड़ों नर-नारी गण, जो श्री देवगुरू भगवान की उनके चरणों में आने से पहले यद्यपि वह ईश्वर को मानते थे, कई देवी-देवतों पर विश्वास करते थे, ब्राह्मो, आर्य, मुसलमान, सिख और सनातनधर्मी आदि कहलाते थे, तो भी उनके यह विश्वास उनकी नीच गतियों को न बदल सके, किन्तु उलटा उन्हें अधिक से अधिक पापी और नीच बनाते रहे-मांस भक्षण आदि कई पाप तो वह ईश्वर की आज्ञा समझ कर ही करते थे। कल्पित ईश्वर अथवा उसकी रची हुई किसी कल्पित पुस्तक व उनके गुरू वा विवेक आदि ने उन्हें सत्य धर्म विषयक कभी कोई ज्योति न दी। आत्मा के बनने व बिगड़ने अथवा उसके विकास व विनाश के संबंध में कोई शिक्षा न दी। पुण्य और पाप की कोई सच्ची हकीकत न बताई। नीचगति विषयक कोई

बोध व उच्चगतिदायक कोई भाव उत्पन्न न किया। और जब जक श्री देवगुरू भगवान की ज्योति और शक्ति उन तक न पहुंची तब तक उनके ईश्वर व किसी देवी देवते ने न तो उन्हें **सत्यधर्म** का ही कुछ ज्ञान दिया और न उनके हृदय की गतियों को परिवर्तित किया - मानो श्री देवगुरू भगवान ने अपनी धर्म शक्तियों के द्वारा जो - जो कुछ उनका हित किया, वह ईश्वर व कोई अन्य कल्पित देवता आदि न कर सका। यह सब कुछ सैकड़ों लोगों का **जाती तज़र्बा** है। इस पर भी यदि ईश्वरवादी अथवा कल्पित मतों के विश्वासी देवधर्म प्रवर्तक की अद्वितीय शक्तियों और उनके अद्वितीय परिवर्तन कार्य व फलों की महिमा को न देख सकें तो यह उनकी अपनी अंधता व उदासीनता का दोष है न कि किसी और का।

जीवनपथ, खण्ड - 8, संख्या - 4,
श्रावन 1965 विं

यही है जीने का ढंग

चमचागिरी प्रमुख हुई, गुणवत्ता है गौण!
मूर्ख बोलते सभा में, बुद्धिमान अब मौन!!
यह कैसी आई सदी, करे फैसले भीड़!
तुम सच के पंथी बने, तेरा उजड़ा नीड़!!
खुदगरजी का ढोल नित, बोले न्यारे बोल!
परहित की बात करे जो होता उसका बिस्तर गोल!!
अधिकारी के रंग में न जाओ तुम भी रंग!
नए जमाने में यहीं, है जीने का ढंग।।
ऐसा जीवन जीना हमें कभी स्वीकार नहीं!
दुनियां को नर्क बनाने का किसी को अधिकार नहीं!!

शोक समाचार

बहुत शोक है कि देव समाज के पुराने सेवक श्री प्रेम चन्द जी सिंगल की धर्म पत्नी श्रीमती सत्यवती जी का 76 वर्ष की उमर में 21 अगस्त को देहान्त हो गया। यह प्रेम कुमार जी के लिए और विशेष कर उनके प्यारे बच्चों के लिए कभी भी पूरा न होने वाला वियोग वा घाटा है। सबके लिए बहुत दुखदाई है। हम इस शोकप्रद देहान्त पर प्यारे धर्म सम्बन्धी प्रेम कुमार जी और उनके बेटों और बच्चों के लिए दिली हमदर्दी का प्रकाश करते हैं। इस नेक स्त्री की आत्मा की रक्षा हो, सहायता हो, उसे शान्ति मिले। इस वियोग को सहने की परिवार को शक्ति मिले।

बलदेव सिंह

क्या औरत होना अभिशाप है?

औरत के लिए अबला, दलित, पैर की जूती सम्बोधन पुरुष प्रधान समाज के अंहकार को दर्शाते हैं। 8 मार्च को Woman Day मनाया जाता है। कुछ संवेदन शील लोगों ने अनुभव किया कि औरतों के अधिकारों के प्रति, समाज को जागृत करने के लिए कुछ प्रयास होना चाहिए। यह प्रयास अच्छा है, परन्तु इससे समाज की मानसिकता नहीं बदली जा सकती। आज भी औरतें अनगिनत प्रकार के जुल्मों की शिकार हैं। अपने परिवार की आर्थिक कमजोरी, बच्चों का मोह शादी के बाद उन्हें जुल्म सहन करने के लिए विवश कर देता है। इस प्रकार की दर्दनाक जिन्दगी सहने के कारण अधिकतर स्त्रियां यही सोचती हैं कि औरत होना ही एक अभिशाप है। अपने दुखों को देखते हुए वह भ्रूण हत्या जैसे पाप के लिए भी तैयार हो जाती हैं, यह सोचकर कि आगे मेरी बेटी को भी इन्हीं दुखों से गुजरना पड़ेगा।

औरतों की ऐसी कृपा पात्र अवस्था होते हुए भी मैंने सदा यह अनुभव किया है कि न केवल औरत होना अभिशाप नहीं बल्कि नेचर का बहुत बड़ा वरदान है। औरत को नेचर ने जिन गुणों से भरपूर किया है, वह बहुत कम पुरुषों में मिलते है। जो सृजनकर्त्ता है, जो जननी है, उसका जन्म अभिशाप कैसे हो सकता है! यह स्त्री ही है, जिसने फलोरिंस नाईटिंगेल, भक्त पूर्ण सिंह, श्रवण कुमार, महात्मा गांधी आदि और कितने महापुरुषों को जन्म दिया है और उनकी ऐसी परवरिश की है कि वह समाज के हित के लिए कुर्बान हो गए।

सबसे बढ़कर शत-शत प्रणाम है उस मां को, उस जननी को जिसने परम पूजनीय भगवान देवात्मा, अध्यात्मिक जगत के सूरज को जन्म दिया।

बच्चे को नौ महीने अपने पेट में रखकर अपने खून की एक-एक बूंद से सींचकर, कठिन पीड़ा में से गुजरकर जन्म देना एक औरत के ही भाग्य में है। वह नन्ही जान जब मां की गोद में आती है, तो उसकी खुशी को कोई माप नहीं सकता, उसको कितना गर्व होता है कि बच्चे के एक-एक अंग की सृजनकर्त्ता वह है। उस गर्व में एक औरत ही सब तरह के जुल्म सहने की सामर्थ्य रखती है।

औरत में गजब की सहन शीलता होती है, जो दुख और पीड़ा शारीरिक तौर पर भी वह सह सकती है, वह पुरुष सहन नहीं कर सकते। जो पूरी-पूरी रात जागकर बच्चे की परवरिश करती है, फिर दिन भर परिवार की जिम्मेवारियों को पूरा करती है, उसका 100वां भाग भी पुरुष नहीं कर सकते। कुर्बानी, त्याग जो स्त्री के लिए साधारण होता है उससे उसकी आत्मा कितनी सशक्त बनती है, वह पुरुषों के भाग्य में नहीं।

घर गृहस्थी चलाने के लिए औरत पुरुषों से कहीं बेहतर है। उसमें कुशल प्रबन्ध के गुण हैं। वह 200 रु० में भी घर चला सकती है और 20,000 रुपये में भी। यह गुण पुरुषों में बड़ी-बड़ी डिगरियों

से नहीं आता। इसलिए संस्थाओं के प्रबन्ध में भी औरतों का प्रबन्ध पुरुषों से बेहतर होता है। यही नहीं कि यह गुण पढ़ी लिखी औरतों में होता है। ग्रामीण महिलाएं भी इसमें निपुण होती हैं। वर्ष 2006 में 14 अविकसित देशों में हुए सर्वे में यह बात सामने आई कि जहां भी ग्रामीण महिलाओं को कृषि वा ग्रामीण संसाधनों के उपयोग में मुख्य भागीदारी दी गई, उन स्थानों पर गरीबी वा भुखमरी कम हुई है। क्योंकि स्त्रियों में परिवारों को खुशहाल बनाने का गुण है।

घर गृहस्थी का निपुणता से बोझ उठाती महिला आर्थिक तौर पर भी पुरुष की सहयोगी बन गई है। कठिन परिश्रम उसकी रग-रग में होता है। सबसे पहले जागना, सब की आवश्यकताओं को पूरा करना, नौकरी से आकर फिर सब को सन्तुष्ट रखना यह गुण महिला में ही हो सकते हैं। उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। महिला को इस मेहनत से गुजारने के लिए नेचर ने भी उसकी जीवनी शक्ति को इतना मजबूत बनाया है कि वह जन्म से ही कमज़ोर होकर भी जीवित रह जाती है, परन्तु एक कमजोर लड़के को पालना डाक्टरों के लिए भी समस्या बन जाता है।

सहनशीलता का गुण स्वभाविक ही औरतों में आ जाता है। बेशक पुरुष उनकी सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाकर कई बार उन्हें प्रताड़ित करते हैं, परन्तु फिर भी इस अमूल्य गुण की धरोहर औरत के पास है।

साधारणत: और उन मोटे पापों से बची रहती है, जिनमें पुरुष डूबे दिखते हैं। पवित्रता उसका एक अमूल्य गहना है। कुछ गिणती को छोड़कर कोई स्त्री शादी के बाद पर पुरुष को कोई महत्व नहीं देती, परन्तु शादीशुदा पुरुषों के हाथों भी स्त्रियों की इज्जत सुरक्षित नहीं। मौका मिलने पर अच्छे चरित्रवान भी गिर जाते हैं।

इतने गुणों की मालिक औरत अबला कैसे हो सकती है? एक जननी, सृष्टि की रचनाकर्त्ता दलित कैसे हो सकती है। आवश्यकता है अपने गुणों को पहचानने की, अपने उचित अधिकारों को पाने की। सधारणत: बच्चे पिता की अपेक्षा मां को ही महत्त्व क्यों देते हैं, क्योंकि विधवा होकर भी एक मां छोटे से काम करके भी बच्चे पाल सकती है, परन्तु स्त्री का यदि देहान्त हो जाए तो पुरुष फौरन दूसरी शादी करके सौतेली मां की गोद में बच्चे डाल देते हैं, फिर वह उनके साथ कैसा व्यवहार करे, यह उनकी सिर दर्दी नहीं रहती। औरत कुर्बानी की मूर्ति है। इतने गुणों से सम्पन्न औरत परलोक में शायद इन्साफ पा सके क्योंकि वहां पर विधान पुरुष के हाथ में नहीं।

हर महिला का यह कर्त्तव्य है कि वह न केवल अपने गुणों को और निखारे बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की सामर्थ्य पैदा करे, तो औरत होना अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है।

सुरजीत बराड़

मेल–मिलाप का आधार सम्मान व कदरदानी है
(श्रेष्ठ कैसे बनें)

जब कभी हम अपने आस–पास के अस्तित्वों की सराहना करना छोड़ देते हैं तो हम नेचर के विभिन्न अस्तित्वों के प्रति मेल जोल की भावना के जीवन से वंचित हो जाते हैं। लोगों से दिन भर में मिलना और उनमें जो कुछ भी अच्छा है उससे उत्साह का अनुभव न करना, इसका अर्थ है कि हम अंह भाव से इतना भरे हैं कि दूसरों के लिए हमारे हृदय में कोई स्थान ही नहीं है और हम उनके प्रति उपेक्षा, उदासीनता और कठोरता का व्यवहार करते हैं।

सराहना और गुण चिन्तन की भावना कृतज्ञता की भावना से भी बढ़कर विस्तृत है। यह हमारा सम्बन्ध उन सबसे जोड़ देती है भले ही वे वस्तुएँ हों अथवा व्यक्ति और जो हमारा कुछ भी भला नहीं करते। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति जो सराहना व गुण चिन्तन की भावना रखता है, एक परोपकारी की प्रशंसा करता है चाहे उस परोपकारी ने उसके लिए कोई भी भला न किया हो। उसे यह भी आशा नहीं होती कि आने वाले समय में वह उसके लिए कुछ भी भलाई करेगा। मैं एक कलाकार की कला की प्रशंसा करता हूँ यद्यपि उसकी कला से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। हमारी कद्रदानी की भावना हमारा सम्बन्ध उन सबके साथ जोड़ देती है जो हमारे उपकारियों की परिधि से भी परे हैं चाहे ये उपकारियों की परिधि कितनी भी विस्तृत क्यों न हो। श्रद्धा सम्मान की भावना कृतज्ञता की भावना से अधिक निस्वार्थ होती है। कृतज्ञता की भावना कितनी ही श्रेष्ठ क्यों न हो अंह केन्द्रित होती है। कृतज्ञ भावधारी जन दूसरे को इस दृष्टि से देखता है कि उसने मेरा क्या भला किया है परन्तु उसका उपकारी किये गये उपकार से बहुत कुछ अधिक होता है। उसके चरित्र की कुछ विशेषताएं ऐसी होती हैं जिनसे उस कृतज्ञ व्यक्ति को कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं हुआ होता। वह उपकारी वास्तव में उस उपकारी की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान होता हैं इन चारित्रिक विशेषताओं को कृतज्ञता की भावना प्रदर्शित नहीं कर सकती। मनुष्य को श्रद्धा के भाव की इस लिए जरूरत है कि वह इसके द्वारा अपने उपकारी के प्रति कई अंगों में अपना सम्बन्ध स्थापन कर सकता है। एक चिकित्सक स्वस्थ होने में मेरी सहायता करता है। उसके लिए कृतज्ञता का भाव उसके साथ मेरा सम्बन्ध जोड़ देता है। हो सकता है कि वह चिकित्सक कला का अच्छा पारखी और कद्रदान हो। मेरी कृतज्ञता की भावना से उसकी कला की विवेचित गुणवत्ता के प्रति श्रद्धा के बिना सम्बन्ध नहीं हो सकता। डा० सुन्दर आकृति वाला हो सकता हैं उसकी अपनी पोशाक पहनने वाला, अच्छी बातचीत करने वाला भी हो सकता है। वह एक अच्छा पिता भी हो सकता है। यह भी संभव है कि वह एक सेवा निष्ठ पति हो। उसके ये सभी गुण उसके साथ सम्बन्ध बनाने में सुअवसर प्रदान करते हैं। कृतज्ञता की भावना हमें उन सब मार्गों पर नहीं ले जाएगी जिससे हम उसके साथ सम्बन्ध स्थापित कर सकें। हमारी श्रद्धा व सराहना की भावना ही हमें यह सब पक्ष दिखाएगी।

निस्वार्थ प्रेम कृतज्ञता से भी अधिक बेरोक–टोक सम्बन्ध स्थापित करने का विस्तृत मार्ग खोल देता है क्योंकि इसमें दूसरों की भलाई का भाव होता है, भले ही उनके द्वारा हमारा अहित हुआ हो। इस निस्वार्थ प्रेम में भी अंह भाव का अंश अवश्य ही मिला रहता है। परन्तु श्रद्धा का भाव सब प्रकार के अंह भाव

के केन्द्रीकरण से परे होता है। श्रद्धा की भावना में केवल दूसरा ही स्वच्छ शीशे में दिखने वाले प्रतिबिम्ब की भाँति दिखाई देता है।

श्रद्धा की भावना हमें दूसरों की श्रेष्ठता के प्रति अग्रसर करती है और विशुद्ध प्रेम तक ले जा सकती है। ऐसी अवस्था में किसी भी अस्तित्व के गुणों की महान महिमा मनुष्य के भीतर श्रद्धा का भाव पैदा कर सकती है और वह उस अस्तित्व के साथ सम्बन्ध स्थापन कर लेता है और उसके प्रति समर्पित हो जाता है। महान रहस्य वादी, विज्ञान में अतुलप्रतिभाशाली व्यक्ति और संसार को हिला देने वाले दिव्य दर्शन दृष्टा किसी भी सत्य के प्रति विशुद्ध प्रेम के उदाहरण हैं। आइये हम इन्हें अब फिलहाल छोड़ दें और श्रद्धा के भाव के विकास के सम्बन्ध में विचार करें जो हमारे दिन प्रति दिन के विविध सम्बन्धों में एकता प्रतिपादन में हमारा सहायक हैं।

दूसरों का ज्ञान, उनका सौन्दर्य, उनके गुण और कौशल हमें उतने ही चमकदार दिखते हैं, जितनी हमारे अन्दर उनके प्रति सराहना की भावना होती है। एक वैज्ञानिक जिसमें सराहना की भावना है, उसे वह जन नहीं समझ सकता जिसके पास वैज्ञानिक दृष्टि नहीं है। एक व्यक्ति जिसमें श्रद्धा की भावना है वह परोपकार के सौन्दर्य को जैसे देख सकता है, वह और साधारण जन नहीं देख सकता। कुछ भी हो श्रद्धा का भाव हमारे ज्ञान और परोपकार की भावनाओं से पूर्णत: भिन्न है। यदि किसी वैज्ञानिक में श्रद्धा की भावना नहीं है तो विश्व में व्याप्त नियमों का राज्य उसे रोमांचित नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि विज्ञान के विद्यार्थी भौतिक नियमों का अध्ययन करते हैं। वे रसायन और जीवन विज्ञान को भी पढ़ते हैं, सामाजिक विज्ञान के नियमों का भी अध्ययन करते हैं। परन्तु वे उससे न तो प्रेरित होते हैं और न रोमांचित। इसका कारण यह है कि उनमें सत्य के प्रति श्रद्धा की भावना का अभाव है। मैं एक महिला को जानता हूँ जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन एक महान आत्मा की सेवा में व्यतीत कर दिया था। परन्तु उसने दूसरों की परोपकार की भावनाओं और कार्यों की कभी सराहना नहीं की। अपनी परोपकार की भावना द्वारा उसे दूसरों की परोपकार की भावनाओं का ज्ञान था। परन्तु इस ज्ञान के आधार पर वह दूसरों की सराहना के लिए कभी प्रेरित नहीं हो पायी।

श्रद्धा और सराहना की भावना उसके लिए वरदान सिद्ध होती है जो इस भावना को रखता है। इस भावना से युक्त व्यक्ति इस संसार को बहुवर्ण सुन्दर संसार के रूप में देखता है जबकि इससे रहित भावना का व्यक्ति इसे केवल तथात्मक अपितु दुखमय रूप में देखता है। सराहना की भावना युक्त व्यक्ति का विपरीत सनकी व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के गुणों को नगण्य बना देता है, क्योंकि उसमें सराहना के भाव का अभाव है। इसलिए उसे कुछ भी उत्साहित नही करता। सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य उस पर कोई प्रभाव नहीं डालते। माता-पिता की सेवाएं उसे जरा भी महसूस नहीं होती। महान व्यक्ति उसे हाड-मांस के बने दिखाई देते हैं। सारे समाज को वह एक दम स्वार्थी, स्नेह रहित, दुष्ट और पापी बोध करता है। जीवन और जगत के सुन्दर पहलुओं की ओर से आँखें बन्द कर ऐसा जन अपने अस्तित्व को नीरस, अन्ध कारमय, दुखी और विषादमय बना देता है। वह उस गन्दी नाली निरीक्षक का जीवन जीता है जो केवल गन्दगी को देखता है और उसकी बदबू को सूघंता है। ऐसे व्यक्ति के लिए जीवन में न कोई प्रकाश है, न

सुन्दरता और न आनन्द।

परन्तु जिस व्यक्ति में श्रद्धा व सराहना का भाव है उसे यह संसार सुन्दर त्यौहार सा दिखाई देता है। उसे छोटी से छोटी वस्तु और क्षुद्र से क्षुद्र प्राणी में भी सौन्दर्य का एहसास होता है। मेरा एक मित्र साहित्यक रुचि का व्यक्ति है। वह कविता पढ़ाया करता था। उसने एक कविता पढ़ायी जिसका शीर्षक था (On Daffodils) "पीले नर्गिस के फूल" कवि वर्डसवर्थ (Wordsworth) ने इस कविता में बताया है कि किस प्रकार उसका हृदय नर्गिस के झूमते फूलों के साथ नृत्य करता है। उस अंग्रेजी के अध्यापक ने कवि के उत्साह को अनुभव किया और उसी उत्साह के साथ उस कविता को पढ़ाया। परन्तु उसने नर्गिस का फूल कभी नहीं देखा था। उसके नगर में एक बार फूलों की प्रदर्शनी लगी तो उसमें नर्गिस के फूल को देखने की बड़ी इच्छा थी। जब उसने उस फूल को देखा तो वह विश्वास न कर सका कि किस प्रकार कवि उस साधारण फूल से इतना प्रभावित हो गया। यह कवि की सराहना का भाव था जिसने उसे उस साधारण फूल के सौन्दर्य का दर्शन कराया और वह सुन्दरता के आनन्द से विभोर होकर नृत्य करने लगा। सराहना कर सकने के लिए व्यक्ति को तुलना के झूठे माप दण्ड त्यागने पड़ते हैं। माता-पिता अपने बच्चे के मुख से पहला शब्द सुनकर कितने आनन्दित होते हैं जबकि वह तोतली भाषा ही बोल पाता है। उस भाषा को ध्वनि विज्ञान या भाषा विज्ञान के मापदण्ड से नहीं मापा जा सकता। वे तो वयस्कों के लिए मापदण्ड हैं। आज हमें शिक्षा में यह पढ़ाया जाता है कि बच्चे के कार्य को उसकी योग्यता और आयु के विकास के आधार पर जांचा जाना चाहिए। उच्चतम स्थान प्राप्त करने वाला विद्यार्थी अपनी कक्षा के स्तर निर्धारण का मापदण्ड नहीं होता। शिक्षा का कार्य व्यक्तिगत होता है। प्रत्येक बच्चे को उसकी समझ उसकी वर्तमान योग्यता व प्रेरणाएं और उसकी पूर्व उपलब्धि और उसकी कारगुजारी के आधार पर ही निर्देशन करना चाहिए। दूसरे बच्चों के कार्य की तुलना में कमजोर होने की स्थिति में भी एक बच्चे को उसके पहले स्तर की तुलना के आधार पर सराहना मिलनी चाहिए। शिक्षक को बच्चे के उन्नत स्तर के प्रति उत्साह दिखाना चाहिए और उसकी सराहना करनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है और उसे इसी रूप में समझना चाहिए। जब एक अध्यापक किसी बच्चे के लेख का मूल्यांकन करता है तो उसकी तुलना एडीसन या स्टीफन से नहीं कर रहा होता। वह बच्चे की जाँच उसके स्तर के आधार पर करता है। यही बच्चे की जाँच का सही तरीका है।

पूछा जा सकता है कि फिर जीवन में आलोचना का क्या स्थान है। व्यक्ति और वस्तुओं में कैसे सुधार हो सकता है यदि उनकी कमियों और त्रुटियों को बताया न जाए। आलोचना तो उन्नति का आत्मा है। यदि हम अपने चारों ओर के वातावरण में जो कुछ उपलब्ध है, उसकी प्रशंसा ही करते चले जाऐं तो एक स्थिरता सी बनी रहेगी और केवल गतिहीन समाज को उत्साह मिलेगा जिसके पास आगे बढ़ने की कोई प्रेरणा न होगी। आलोचना की भूमिका के सम्बन्ध में पूछना भी उचित है। प्राय: आलोचना का स्तर अंह प्रेम होता है। जो भी मेरे लिए सुखकर है, मैं तो उसी को अच्छा कहूँगा। हमारा विचार स्वार्थपूर्ण होता है। कोई वस्तु जो मेरे अंह भाव को तुष्टि नहीं देती वह मेरी दृष्टि में बुरी है। मैं दूसरों की आलोचना दंभ के कारण

करता हूँ। इस कारण नहीं कि इससे किसी स्तर के हित या सत्य या सौन्दर्य का मूल्यांकन होता है। मैं लोगों के वस्त्रों, व्यवहार, चाल ढाल या बातचीत के तरीकों की आलोचना करता हूँ। मैं उन क्षेत्रों के बारे में अपनी राय देता हूँ जिनके बारे में मुझे तनिक भी न ज्ञान है न शिक्षा और न प्रशिक्षण। अपने अंह भाव में मैं यह भी ध्यान नहीं देता कि किसी भी कार्य को कुशलता से करने के मार्ग में क्या बाधाएं या सीमाएं हैं। इसलिए अधिकतर आलोचनाएं न सही होती हैं न उपयोगी।

हमारी आलोचना सत्य पर तभी आधारित होती है जब हम किसी विषय के अच्छे बिन्दुओं के प्रति भी उतने ही उत्साहित रहें जितना कि कमियों के प्रति उत्साहित हो जाते हैं। यदि नैतिक दृष्टि से हमारी आलोचना किसी त्रुटी या चूक की ओर इंगित करती है तो नैतिकता का ही तकाजा है कि ठीक ठाक पक्षों की मुक्त कंठ से प्रशंसा भी करें। यदि किसी बच्चे को देर से आने के लिए या होमवर्क न करने के लिए झिड़कना उचित है तो यह भी हमारा कर्तव्य है कि जब वह समय पर आए और अपना होमवर्क ठीक प्रकार से करके लाए तो हम उसकी सराहना करें। प्राय: होता यह है कि बच्चे का समय पर आना या उसका अपना गृह कार्य करना उसका एक साधारण कर्तव्य सा मान लिया जाता है और यदि वह देर से आता है अथवा गृहकार्य नहीं करता तो हम उसके प्रति कठोर और कटु हो जाते हैं। चूंकि अब हमारी आलोचना में कटुता और सराहना का सन्तुलन नहीं रहता अत: यह सत्य पर आधारित नहीं होती जो कि इसका वास्तविक लक्ष्य होता है।

प्रत्येक परोपकार की भावना असत्य की ओर फिसल सकती है। एक प्रशंसक शायद यह न देख पाए कि सुधार की कहां आवश्यकता है, उसी प्रकार जैसे आलोचना करने वाले को यह समझ नहीं रहती कि उस स्थिति में क्या अच्छा है क्योंकि परोपकार की भावना का आधार ही सत्य से इधर-उधर हो सकता हैं। वस्तुत: क्योंकि हम अंह भावना के कारण स्वार्थ, दम्भ, आत्मप्रशंसा और चापलूसी से भरे होते हैं, इसलिए हम उचित सराहना भी नही कर पाते। डेल कार्नेगी अपनी पुस्तक "किस प्रकार मित्रों को जीता जाए और लोगों को प्रभावित किया जाए" में एक घटना देते हैं जिससे स्पष्ट है कि किस प्रकार हम जीवन की अच्छी बातों को व सामान्य बातों को तो सामान्य रूप में ले लेते हैं परन्तु जब कुछ भी गलत हो जाता है तो हम रोष से भर जाते हैं और उसके प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हैं। एक गृहिणी बहुत ही परिश्रमपूर्वक अपने परिवार के लोग उस अच्छे भोजन का स्वाद लेते और उसे एक सामान्य बात समझते। उन्होंने कभी किसी प्रकार की प्रशंसा या कृतज्ञता प्रगट नहीं की। एक दिन गृहिणी ने बर्तनों में जिनमें भोजन परोसा गया था, सूखी घास भर दी। खाने वाले आए, जैसे ही अपना-अपना बर्तन खोला उसमें घास देखी तो चिल्ला पड़े। इस पर उस गृहिणी ने कहा-मैं चाहती हूँ कि जब आपको अच्छा भोजन मिलता है तब भी आप सराहनापूर्वक चिल्लाएं जैसा कि आप इस बुरी स्थिति पर कर रहे हैं। उसके शब्दों ने उन सबकी आँखें खोल दीं। उन्होंने अच्छा भोजन के लिए सराहना न करने पर गृहिणी से क्षमा याचना की। इसलिए सराहना की भावना के लिए इस साधना की भी आवश्यकता है कि हम अपने अंह भाव को भी कम करें ताकि हम जीवन में किसी स्थिति का मूल्यांकन ठीक प्रकार से कर सकें।

सराहना की भावना हमारा दूसरों के साथ अच्छा सम्बन्ध स्थापित कर देती है। यदि मुझे दूसरों में

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कुछ भी अच्छा दिखाई नहीं देता तो फिर उससे हम अपना सम्बन्ध समाप्त कर लेते हैं। उसके साथ रिश्ता बनाए रखने के कोई बिन्दु ही नहीं पाते। एक नौकर ने घर में काम करना बन्द कर दिया। कुछ समय के बाद मैं उसे सड़क पर मिला। मैंने उससे पूछा कि उस घर में उसने कार्य करना क्यों छोड़ दिया है। उसने उत्तर दिया-उस घर की गृहिणी को मेरे काम में कोई अच्छी बात ही दिखाई नहीं देती। मेरे किसी कार्य से उसे प्रसन्नता ही नहीं होती। उसके इस बयान में अत्युक्ति हो सकती है परन्तु यह सच है कि आपसी सम्बन्ध कभी भी स्थापित नहीं हो सकता यदि दोनों में एक में भी यह भाव है कि दूसरे के हृदय में मेरे लिए कोई स्थान नहीं है। यदि किसी व्यक्ति को हम सुधारना चाहते हैं, तो पहले उसकी सभी अच्छी बातों की हमें सराहना करनी चाहिए और इस प्रकार उसके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए। शिक्षा जगत में हमें बताया जाता है कि पहली बात जो हम किसी पिछड़े हुए अथवा कमजोर बच्चे के लिए कर सकते हैं वह यह कि हम उसके साथ आत्मीयता का भाव स्थापित करें, उसे स्नेह दें, उसकी प्रशंसा करें और जब वह बच्चा हमें स्वीकार कर ले और हमारे में पूर्ण विश्वास कर ले तो हम उसका सुधार प्रारम्भ करें। जो कुछ विद्यालय की दुनिया के लिए सत्य है, वही सम्पूर्ण रूप से समाज के लिए भी सत्य है।

शेष पृष्ठ 2

8:15 बजे वे लोग एयरपोर्ट पर पहुंच गए, जबकि इसके पहले उन्होंने सरकारी बस के अलावा किसी वाहन में सफर नहीं किया था। 10:5 बजे विमान ने उड़ान भरी । 11:28 बजे वे कोयंबटूर हवाई अड्डे पर आ गए और 11:55 के पहले यूनिवर्सिटी पहुंच गए। कोयंबटूर यनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार को चेन्नई के उनके समकक्ष ने सूचना दे दी थी। स्वाति को 12:5 पर काउंसलिंग के लिए बुलाया गया और 12:28 पर उसे एडमिशन लेटर मिल गया। और 12:40 बजे स्वाति की सफलता पर ट्वॉकर ने ट्विटर और फेसबुक के माध्यम से पार्टी की और उन्हें वहां पहुंचाने में हुए खर्च को आपस में बराबर बांट लिया।

फंडा यह है कि गुड समैरिटन (दूसरों की मदद करने वाले नेक लोग) सिर्फ मिथक नहीं हैं। होता यह है कि हममें से कुछ इसे घर में कहीं खो देते हैं। अगर आप उसे खोजना चाहें तो यकीनन आपको वह अपने घर में ही मिल जाएगा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts